ISTORY Lecture NO - 42. B.A - 2nd
PAPER - 3

बाबर की उपलब्धियां

BY

Dr. KOMAL KUMARI
[GUEST PROFe.]
SNSRKS. COLLEGE,
SAHARSA

Scanned with CamScanner

Q.2.→ बाबर के आक्रमण में निरन्तर सफलता के क्या कारण थे ?

उत्तर→ बाबर के भारतीय आक्रमणों मे निरन्तर सफलता के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे:-

(1.) राजनैतिक दुर्बल स्थिति :→

तात्कालीन राजनैतिक दुर्बल स्थिति बाबर के भारतीय आक्रमण में उसकी सफलता का प्रमुख कारण था, क्यों कि भारत राजनैतिक एकता समाप्त हो गई थी और वह अनेक छोटे - छोटे राज्यों में विभक्त हो गया था। डॉ० ईश्वरी प्रसाद के अनुसार " भारत इस प्रकार 16 वीं शताब्दी के आरम्भ में राज्यों का एक समूह मात्र था।

(2.) बाबर योग्य सेनापति :-

बाबर बड़ा ही योग्य और अनुभवी सेनानायक था और एक योग्य सैनिक के सभी

Scanned with CamScanner

गुण उसमें विद्यमान थे। इसके विपरीत उसका विपक्षी इब्राहीम लोदी अनुभव शून्य तथा अयोग्य सेनापति था। फलतः उसे परास्त करने में बाबर को कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई।

(3) सेना की रण-कुशलता :→

बाबर की सेना बड़े ही रण-कुशल अश्वारोहियों तथा तीरन्दाजों की सेना थी। जिसका निशाना बड़ा ही सही लगता था। उच्चकोटि की पैंतरेबाजी थी।

(4) भारतीय सेना की विशालता :→

भारतीयों की सेनाओं की विशालता भी बाबर की सफलता का कारण बनी क्यों कि विशाल सेना का सुचारु रीति से संचालन करना असम्भव हो जाता था और उसकी गतिशीलता

Scanned with CamScanner

तथा पैतरेबाजी समाप्त हो जाती थी। इसके विपरीत बाबर अपनी लघु सेना का संचालन इतनी कुशलतापूर्वक करता था कि उसकी गतिशीलता अधिक तीव्र हो जाती थी।

(5) बाबर द्वारा तोपखाने का प्रयोग

बाबर की सफलता का एक अन्य प्रमुख कारण बाबर द्वारा तोपखाने का प्रयोग करना भी था। ~~कानीपत~~ भारतीय सेनापति अपने हाथियों को सेना के अग्र भाग में रखते थे। और उसका उत्तर बाबर तोपखाने से देता था। तोप जब अग्नि की वर्षा करती थी तब भारतीयों की सेना का उसके सामने ठहरना असम्भव हो जाता था।

(6.) अनुपम - व्यूह रचना :-

बाबर की

सफलता का कारण उसकी अनुपम व्यूह रचना थी। व्यूह रचना में बाबर बड़ा ही प्रवीण था। पानीपत तथा खानवा के महत्वपूर्ण युद्धों में अपनी व्यूह रचना से ही उसे विजय प्राप्त करने में बड़ी सफलता मिली थी।

(7.) तुलुगमा रण-नीति का प्रयोग:- बाबर अपनी सेना के अग्र भाग के दोनों पक्षों में वह 'तुलगमा' सेनाएँ रखता था जो बड़ी ही द्रुतगति से शत्रु के बायें तथा दाहिने पक्ष को मोड़कर उसके पिछे पहुँचने और उसे चारों ओर से घेर लेने का प्रयत्न करती थी। इस तुलुगमा रण-नीति से सदैव ही उसे अपने उद्देश्यों में सफलता मिली।

(8.) 'जेहाद' की घोषणा:- हिन्दुओं के विरुद्ध जितने भी युद्ध बाबर ने किए सबको उसने 'जेहाद' का रूप दिया। इस जेहाद घोषणा से सैनिकों को बड़ा उत्साह मिलता था।

Scanned with CamScanner